Roll No. ..... Total Pages: 02

0805

POST GRADUATE DIPLOMA IN YOGA EXAMINATION, 2019

SANSKRIT AND BHAGVAD GITA

Paper – V

Time: Three Hours

Maximum Marks: 100

Attempt any five questions. All questions carry equal marks.

किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

प्र.1 संस्कृत भाषा की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए वर्तमान में उसकी उपयोगिता सिद्ध कीजिये। (20)

प्र.2 (क) वर्णमाला को स्वर एवं व्यञ्जन आदि के भेद से स्पष्ट कीजिये। (10)

(ख) सन्धि व समास में सोदाहरण अन्तर स्पष्ट कीजिए। (5)

(ग) निम्न वर्णों के उच्चारण स्थान लिखिए। (5)

क, च, ट, त, प

प्र.3 (क) किन्हीं पाँच पदों की संधि/संधि विच्छेद कीजिए – (4×5=20)

(i) हिम + आलय

(ii) सदैव

(iii) पुष्पाञ्जलि

(iv) यद्यपि

(v) हित + उपदेश

(vi) महौषधिः

(ख) किन्हीं पाँच पदों का समास विग्रह करके समास का नाम लिखिए –

(i) रामलक्ष्मणौ

(ii) राजपुत्रः

(iii) पीताम्बरः

(iv) सांख्ययोगः

(v) देवालय

(vi) कार्यकुशलः

(ग) किन्हीं पाँच वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए –

(i) योगः प्रातः काले एव करणीयः।

(ii) हठयोग प्रदीपिकायाः लेखकः स्वात्मारामः आसीत्।

(iii) यथा राजा तथा प्रजा।

(iv) अस्माकं विद्या योग–विद्या अस्ति।

(v) वयं योग विद्यां ज्ञातुं संस्कृतम् अपि पठामः।

(vi) ईश्वरः संसार रचयति।

(घ) प्रकृति और प्रत्यय के संयोग से किन्हीं पाँच शब्दों का निर्माण करके उनका अर्थ भी लिखिये –

(i) दृश् + अनीयर्

(ii) गम् + क्त्वा

(iii) दा + तुमुन्

(iv) आ + दा + ल्यप्

(v) युज् + घञ्

(vi) पा + तुमुन्

प्र.4 भक्तियोग से आप क्या समझते हैं? मानव जीवन में इसकी उपादेयता सिद्ध कीजिए। (20)

प्र.5 ज्ञानयोग और कर्मयोग को समझाइये। आपकी दृष्टि में इन दोनों में से कौन श्रेष्ठ है और क्यों? (20)

प्र.6 किन्हीं दो विषयों पर टिप्पणियाँ लिखिए – (10+10=20)

(i) स्थितप्रज्ञ

(ii) योगः कर्मसु कौशलम्

(iii) राजयोगः

(iv) भक्त के प्रकार

प्र.7 सश्लोक गीता में प्रतिपादित आत्मा की अमरता को सिद्ध कीजिये। (20)

प्र.8 किन्हीं दो श्लोकों की सविस्तार व्याख्या कीजिए। (10+10=20)

(क) योगस्थः कुरु कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा धनञ्जय।
सिद्ध्यसिद्ध्योः समो भूत्वा समत्वं योग उचयते।।

(ख) तेजः क्षमा धृतिः शौचमद्रोहो नातिमानिता।
भवन्ति संपदं दैवीम् अभिजातस्य भारत।।

(ग) चञ्चलं हि मनः कृष्ण प्रमाथि बलवद्दृढम्।
तस्याहं निग्रहं मन्ये वायोरिव सुदुष्करम्।।

(घ) न जायते म्रियते वा कदाचिन्
नायं भूत्वा भविता वा न भूयः।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो
न हन्यते हन्यमाने शरीरे।।